केवल निजी वितरण के लिए

ECHOES
INDIA

श्री राम चंद्र मिशन

नवम्बर २०१४ खंड ७, अंक ६

मणपाक्कम से समाचार

अगस्त २०१४

रविवार, ३ अगस्त

गुरूदेव ने सत्संग कराया और उसके बाद एक विवाह सम्पन्न करवाया । गुरुदेव की अस्वस्थता के दिनों में उनके शरीर में नलियाँ लगी हुई थी, आज उनको बिना नलियाँ लगे हुए देखना सुखद था; जो कि संकेत है कि उनके स्वास्थ्य में सुधार हो रहा है । जब वे अपने कार्यालय वापस गये, तो बहुत से अभ्यासियों ने उनके साथ फोटोग्राफ़ खिंचवाये । यह हर्ष और उल्लास का क्षण था । इसके पश्चात् गुरूदेव काफ़ी थक गये थे और उन्होंने दिन में अधिकांशतः आराम किया ।

शाम के समय, उन्होंने सम्मोहन के बारे में 'समह्वेयर इन टाइम' नामक एक आकर्षक फिल्म देखी । गुरूदेव ने दो घंटे की पूरी फिल्म देखी जो रात्रि ९:०० बजे आरंभ हुई थी ।

गुरूदेव की इस सप्ताह की दिनचर्या यह थी कि वे प्रातः ६:०० बजे लगभग उठते, अपनी फिजियोथिरेपी करते उसके बाद अपनी व्हील चेयर में कार्यालय आते, और समाचार पत्र सुनते हुए, जो उनके लिये पढ़ा जाता, अपना नाश्ता करते । इसके पश्चात् वे बाहर आते और कुछ समय के लिये धूप में बैठते ।

४ अगस्त को वे प्रातः लगभग ८:४५ बजे बाहर आये और वहाँ उपस्थित कुछ अभ्यासियों को एक छोटी सिटिंग दी । फ़िर वे अन्दर गये और बंगलौर के एक अभ्यासी डाक्टर सम्बन्धित टी.वी. साक्षात्कार देखा । गुरूदेव इसमें बहुत रुचि ले रहे थे और इसे आधे घंटे से अधिक समय तक देखते रहे । फ़िर उन्होंने माईकल सेन्डेल का धारावाहिक 'जस्टिस' देखा तथा कहा कि यह उनके पसन्दीदा कार्यक्रमों में से एक है ।

५–७ अगस्त २०१४

गुरुदेव के नाश्ता करने के बाद एक बहन ने कहा, "गुरुदेव मैं आपसे बहुत दूर हूँ, परन्तु मैंने यह कभी महसूस नहीं किया कि आप मेरे साथ नहीं हैं ।" गुरुदेव ने कहा, "हाँ यही सतत स्मरण की शक्ति है । इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि हम कहाँ पर हैं, गुरुदेव हमेशा हमारे साथ होते हैं ।"

नाश्ते के पश्चात् गुरुदेव बाहर आये और लंबे समय तक धूप में बैठे रहे । वे जैकी से गाज़ा युद्ध की वर्तमान स्थिति के बारे में पूछ रहे थे । वे इज़राइल और फिलीस्तीन के मध्य इस संघर्ष के इतिहास के बारे में जानने के भी इच्छुक थे । गुरूदेव ने जैकी द्वारा बताये विभिन्न बिन्दुओं को बड़े ध्यानपूर्वक सुना और कहा, "ऐसे किन्हीं भी युद्धों के प्रमुख कारणों में से एक कारण धर्म होता है ।" लगभग ११:३० बजे वे अन्दर चले गये ।

६ अगस्त की सुबह उनसे मिलने आये एक अभ्यासी से गुरुदेव ने कहा, "मैंने सुना है तुम सत्संग में उपस्थित नहीं रहते । क्या बात है?" अभ्यासी ने कोई जवाब नहीं दिया और गुरूदेव ने कहा, "यह मत सोचो कि सिर्फ सेवा करना ही पर्याप्त है । हम सेवा करते हैं क्योंकि यह हमारा कर्तव्य है, पर सिर्फ़ यही हमें आगे नहीं ले जायेगा । अभ्यासियों को अभ्यास नियमित रूप से करना है ।" ७ अगस्त को, गुरूदेव एक अभ्यासी द्वारा खरीदी गयी नयी कार को देखने बाहर आये । गुरूदेव कार के अंदर की विभिन्न प्रकार की नियंत्रण प्रणाली के विषय में पूछ रहे थे और इसकी डिक्की (ट्रंक) के आकार से विशेष रूप से प्रभावित थे । फ़िर वे बाहर आकर बैठ गये और प्रातः ९:०० बजे के सत्संग के साथ–साथ सभी को एक सिटिंग दी ।

व्हिस्पर्स विचार–विमर्शः ९ अगस्त के दिन गुरूदेव व्हिस्पर्स के कुछ संदेशों की प्रतिलिपि को देख रहे थे और एक अभ्यासी ने पुस्तक में से कुछ अंशों को पढ़ा ।

गुरूदेव ने बड़े ध्यानपूर्वक सुना और कहा, "मैंने बहुत पहले 'हायरार्की' शब्द प्रयोग किया था और अब बाबूजी इस शब्द को व्हिस्पर्स में प्रयोग कर रहे हैं ।" सभी हँसने लगे ।

वहाँ पर अठारह साल से कम उम्र के चार लड़के एवं लड़कियाँ थे जो अभ्यास शुरु करना चाहते थे और गुरुदेव उन सभी को सिटिंग देने के लिये बहुत उत्सुक थे । लेकिन गुरुदेव बहुत थके हुये थे, इसलिये कमलेश भाई उनको सिटिंग देने के लिये सहमत हो गये ।

१० अगस्त को रक्षा–बन्धन (भाई और बहन के बीच प्यार के बन्धन को मनाने का दिन) था । गुरुदेव प्रात: ६.३० बजे तक उठ गये थे और मुरादाबाद की एक बहन ने गुरुदेव के हाथ पर राखी (पवित्र धागा) बाँधी । गुरुदेव का परिवार आया और वे (गुरुदेव) बहुत अच्छे भाव में थे । गुरुदेव ने नाश्ता किया तथा कमलेश भाई ने ध्यान कक्ष में रविवारीय सत्संग कराया । गुरुदेव अपनी आँखें बन्द कर समाचार पत्र को, जो उनके लिये पढ़ा जा रहा था, सुन रहे थे । जैसे ही सत्संग समाप्त हुआ, गुरुदेव ने कहा कि वे अन्दर जाना चाहते हैं ।

उसके बाद गुरुदेव धूप में बैठने के लिये बाहर आये और जो लोग भी उनके पास थे वे सब चुप–चाप बैठ गये । दो बहनें आगे आयीं और उन्होंने भी गुरुदेव के हाथ में राखी बाँधी ।

गुरुवार, १४ अगस्त २०१४

नाश्ता करने और समाचार पत्र पढ़ने के बाद गुरुदेव कई अभ्यासियों से मिले और उनके सभी प्रश्नों के उत्तर दिये । चीन से आयी एक बहन ने चीनी भाषा में कहा, "मैं आज सुबह आप को देख कर बहुत खुश हूँ" और गुरुदेव ने उत्तर दिया "मैं सभी भाषाओं में आज सुबह आपको देख कर बहुत खुश हूँ" और सभी हँस पड़े । यद्यपि गुरुदेव बहुत ही थके हुये थे फिर भी ऐसे सरल कथन से गुरुदेव ने वातावरण को बहुत ही हल्का बना दिया । एक बहन ने कहा कि वे उस दिन वापिस जा रही हैं और गुरुदेव का एक संदेश चाहती हैं जिसका वह आजीवन अनुशरण कर सकें । गुरुदेव ने कहा "उन सभी से प्रेम करो जिनको वह प्रेम करता है" ।

यह लालाजी महाराज की महासमाधि का दिन था, लेकिन क्योंकि गुरुदेव थके हुये थे इसलिये उन्होंने कॉटेज में उपस्थित लोगों को एक छोटी सिटिंग दी तथा कमलेश भाई ने ध्यानकक्ष में सुबह ९ बजे का सत्संग कराया । सत्संग के बाद व्हिस्पर के जिस संदेश को पढ़ा गया उसमें इस दिन के महत्व को बताया गया था और यह भी कि हमें किस प्रकार इस दिन को सतत स्मरण में रहकर व्यतीत करना चाहिये ।

शुक्रवार, १५ अगस्त २०१४

क्योंकि यह दिन भारत का स्वतन्त्रता दिवस था, अंचल प्रभारी विनीत राणावत ने ध्यान–कक्ष के निकट लगभग ६.३० बजे प्रात: ध्वजारोहण किया । भाई कमलेश ने सुबह ९ बजे का सत्संग कराया तथा उसके बाद एक विवाह सम्पन्न कराया । गुरुदेव पिछले कुछ दिनों से कमजोर महसूस कर रहे थे और ऐसा लग रहा था कि वे फिर बीमार पड़ जायेंगे । परन्तु डाक्टरों ने तकलीफ़ को काफ़ी पहले ही पहचान कर उपचार शुरु कर दिया था अत: यह गुरुदेव को उतना अधिक प्रभावित न कर सकी ।

रविवार, ३१ अगस्त २०१४

गुरुदेव सुबह ७.३० बजे तक उठ गये थे और अपने ई मेल देखने लगे । फ़िर उन्होंने नाश्ता किया तथा काफी देर तक समाचार पत्र पढ़ते रहे । इसके बाद वे बहुत थक गये थे इसलिये वे अपने शयन–कक्ष में चले गये । सभी यह सोच रहे थे कि वे विश्राम करेंगे परन्तु वे सभी को चौंकाते हुये बाहर आकर छाया में बैठ गये । उन्होंने विभिन्न विषयों पर लम्बी चर्चा की । एक अभ्यासी ने कहा, "गुरुदेव मैंने प्रेम को एक शक्ति कभी नहीं समझा था । केवल सहज मार्ग में आने के बाद ही मैं यह समझ सका कि प्रेम कितना प्रभावशाली है"। आश्रम के सन्दर्भ में गुरुदेव ने कहा, "मैं हर उस जगह आश्रम चाहता हूँ जहाँ ३० या अधिक अभ्यासी हों ताकि वे दूसरों के घर जाकर सिटिंग लेने में होने वाली असुविधा से बच सकें क्योंकि तब वे आश्रम में ही सिटिंग ले सकेंगे"।

सितम्बर २०१४

शुक्रवार, १२ सितम्बर: द्वारका में प्रवास

गुरुदेव आश्रम के ठीक पीछे स्थित द्वारका अपार्टमेन्ट्स में अपने फ़्लैट का उद्घाटन करने गये। सुबह हल्की बारिश हो रही थी लेकिन गुरुदेव तैयार हो गये और गोल्फ़कार्ट द्वारा वहाँ गये। उन्होनें वहाँ उपस्थित सभी लोगों के लिये सत्संग कराया। सिटिंग के बाद गुरुदेव बहुत थक गये थे लेकिन फिर भी वे चाहते थे कि वे उन कुछ अतिथियों को, जिन्हें उन्होंने आमन्त्रित किया है, उपहार दें। यद्यपि चिकित्सकों ने गुरुदेव के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुये उन्हें आराम करने की सलाह दी थी, परन्तु उन्होने अपनी इच्छाशक्ति को बढ़ाकर अपने सारे कार्य समाप्त किये और उसके पश्चात जब सारी चीजें हो गयीं तो उन्होंने कुछ देर विश्राम किया।

शाम के समय गुरुदेव थोड़ी देर के लिये लगभग तीस अभ्यासियों के साथ बैठे और फ़िर वापस अन्दर चले गये। उस दिन वह शाम को ही आराम करने चले गये।

शनिवार, १३ सितम्बर: गुरुदेव कॉटेज में वापस आये और जैसा कि वो बहुत थके हुये थे, उन्होंने पूरे दिन विश्राम किया।

१५–१९ सितम्बर: पूरे सप्ताह गुरुदेव ने ज्यादातर विश्राम किया। कभी कभी वो नाश्ता या दोपहर का भोजन करने ऑफ़िस के कमरे में आते और फ़िर वापस अपने शयनकक्ष में चले जाते थे। अभ्यासियों के कॉटेज में गुरुदेव से मिलने हेतु आने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था क्योंकि गुरुदेव किसी से भी मिलने के लिये उपलब्ध नहीं थे। हालाँकि जब भी वह ऑफ़िस में आते और यदि वहाँ कुछ अभ्यासी होते तो वे थोड़ी देर के लिये उन से अवश्य मिलते। चेन्नई का मौसम भी बहुत मेघाच्छादित तथा बरसात का था, जो कॉटेज़ में शान्ति का वातावरण और अधिक गतिविधियाँ न होना प्रतिबिम्बित कर रहा था। सामान्यतया इस महीने गुरुदेव अपने कॉटेज़ में ही पूरी तरह सीमित रहे।

सुबह के समय नाश्ते और समाचार पढ़ने के पश्चात कभी कभी ऐसा होता कि गुरुदेव बाहर आकर धूप में बैठ जाते और बहन एलिज़ाबेथ उन्हें बाबूजी के कुछ पत्र और लेख पढ़कर सुनाती। वह मिशन के एक नये प्रकाशन के लिये इनका संकलन कर रही हैं।

आम तौर पर गुरुदेव जब धूप में बैठने आते तो काफ़ी थके हुवे और निद्रित दिखाई देते, परन्तु जैसे ही बहन एलिज़ाबेथ बाबूजी का साहित्य पढ़ना शुरु करती गुरुदेव उसमें पूरी तरह से लीन हो जाते। उनके आस–पास आँखे बन्द करके बैठे हुवे सभी अभ्यासियों सहित सारे वातावरण में एक पूर्ण शान्ति सी छा जाती। जब यह साहित्य पठन सत्र पूर्ण होता तो कोई भी गुरुदेव को अक्षरशः कान्तिमान देख सकता था, और वे अपने कक्ष में वापस जाते समय सभी अभ्यासियों से आनन्द से मिलते। गुरुदेव के लिये उनकी नियमित दिनचर्या से अलग यह एक बहुत ही स्वागत योग्य परिवर्तन था और उन्होंने इसका वास्तव में आनन्द उठाया।

अफ्रीकन संगोष्ठी – 'एक साथ होना'

१३ से २१ अगस्त २०१४

अंगोला, केमेरून, कोंगो (ब्राज़ाविल), कोट डी आइवोइर (आइवोरी कोस्ट) और गैबॉन का प्रतिनिधित्व कर रहे १२ अभ्यासी फ्रैन्च बोलने वाले अफ्रीकी देशों के लिये आयोजित एक सप्ताह की संगोष्ठी में भाग लेने मणपाक्कम आये थे। संगोष्ठी में अभ्यासियों ने व्हिस्पर्स की कुछ चयनित पठन सामग्री, जिसमें 'एक साथ होना' विषय के महत्व एवं आवश्यकता पर बल दिया गया है, के बारे में विस्तार से चर्चा की। कोट डी आइवोइर से आयी एक अभ्यासी बहन और अंगोला से आये अभ्यासी भाई को पूज्य गुरुदेव ने प्रशिक्षक बनाया।

संगोष्ठी के समापन दिवस से एक दिन पूर्व, पूज्य गुरुदेव ने सभी प्रतिभागियों को कॉटेज में बुलवाया और उन्हें एक सिटिंग दी, जो बहुत गहरी व प्रगाढ़ थी। फिर उनका कमलेश भाई के साथ एक प्रश्नोत्तर सत्र तथा साधना के विभिन्न पक्षों के महत्व पर बहुत ही आत्मसात करने और आँख खोलने वाला सत्र हुआ। जब तक वे अपना संभाषण पूर्ण करते सभी अभ्यासी गहरी आध्यात्मिक अवस्था में डूब चुके थे।

ओणम का उत्सव

६ से ८ सितम्बर २०१४

केरल से लगभग ३५० अभ्यासी ओणम को, जो केरल का एक उत्सव है, पूज्य गुरुदेव के साथ मनाने मणपाक्कम आये। तिरुवोनम पर (७ सितम्बर), अभ्यासियों ने पूज्य गुरुदेव के कॉटेज गेट के सामने पोक्कलम (पुष्प स्वरूप) बनाया। पूज्य गुरुदेव इसे देखने बाहर आये और सभी अभ्यासियों को उत्सव के अवसर पर शुभकामनायें दी। अभ्यासियों को संबोधित करते हुए उन्होंने संस्कृति, भाषा, धर्म की भिन्नता से परे सद्भाव और एकता की आवश्यकता पर चर्चा की और सभी के लिये मंगलमय ओणम की कामना की। स्वयंसेवकों ने आश्रम के रसोईघर में ओणम भोज तैयार किया था जिसे लगभग ३००० अभ्यासियों को, जो रविवारीय सत्संग में उपस्थित थे, परोसा गया। अभ्यासी बहनों ने शाम के समय ध्यान कक्ष में एक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया, जिसका पूज्य गुरुदेव ने कॉटेज में बैठकर आनन्द लिया। ८ तारीख को एक दूसरा पोक्कलम (पुष्प स्वरूप) बनाया गया और पूज्य गुरुदेव उसे देखने बाहर आये, फिर उन्होंने कॉटेज में केरल से आये अभ्यासियों से बातचीत की।

तमिलनाडु और कर्नाटक के प्रशिक्षकों की संगोष्ठी

२३ से २७ सितम्बर २०१४

मणपाक्कम में आयोजित इस पाँच दिवसीय संगोष्ठी में लगभग ४०० प्रशिक्षकों ने भाग लिया। कमलेश भाई ने प्रतिदिन सुबह ९ बजे का सत्संग कराया, चारों दिन प्रशिक्षकों को सम्बोधित किया और प्रशिक्षकों द्वारा पूछे गये प्रश्नों का उत्तर भी दिया। पूज्य गुरुदेव ने प्रशिक्षकों को तीसरे दिन संबोधित किया और 'विनम्रता' पर बोले, जो इस संगोष्ठी का मूलविषय था। उन्होंने कहा कि विनम्रता का अर्थ होता है अन्दर और बाहर से एक जैसा होना तथा स्वयं के प्रति सच्चा होना। उन्होंने बताया कि वे मिशन में स्वयं के लिये प्रशिक्षक, वरिष्ठ प्रशिक्षक, सचिव या अध्यक्ष की भूमिका हेतु कभी चिन्तित नहीं थे; उनके लिये तो पूज्य बाबूजी महाराज का चेला (शिष्य) होना ही पर्याप्त था। उनका जीवन केवल मिशन के कार्यों पर ही केंद्रित रहा है और जीवन का सबसे बड़ा आनन्द यह है कि इस तरह से कार्य करें कि जब कोई पूज्य बाबूजी महाराज के पास मिलने जाये तो वह उनके चहरे पर मुस्कान देखे; पूज्य गुरुदेव के लिये यही सबसे बड़ा पुरस्कार था।

हालांकि पूज्य गुरुदेव पूरी संगोष्ठी में प्रशिक्षकों के साथ उपस्थित रहने में असमर्थ थे, तो भी वे फेसिलिटेटर्स से दिन भर की कार्यवाही को समझने के लिये जानकारी लेते रहते थे। एक अनौपचारिक बातचीत में पूज्य गुरुदेव ने कहा कि प्रशिक्षकों के लिये यह महत्वपूर्ण है कि वे अनुकरणीय व्यक्ति (रोल मॉडल) बनें।

उन्होंने कहा, "गुरुदेव को अन्तर्तम में रखें और उनकी शिक्षाओं को बाह्य जीवन में प्रकट करें"; यह हम सभी के लिये स्वयं पर कार्य करने तथा व्यवहार में लाने हेतु गुरुदेव का एक गहन कथन है ।

कमलेश भाई का उद्घाटन भाषण अभ्यासियों के साथ प्रशिक्षकों के व्यवहार तथा किस प्रकार आरम्भिक अनुभव अभ्यासी के मिशन में बने रहने के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण है, पर केन्द्रित था । अन्य दिवसों पर कमलेश भाई ने कुछ दूसरे विषयों को छुआ, जैसे अभ्यासी की हालत को कैसे पढ़ा जाये, व्हिस्पर्स का महत्व तथा सतत एवं गहन साधना के माध्यम से वर्तमान विश्व में परिवर्तन लाने में अभ्यासी की भूमिका । वे स्वीकार्यता पर भी बोले एवं यह भी बतलाया कि इसमें विनम्रता, निष्ठा एवं सच्चाई कैसे मदद करती है, परन्तु दुर्भाग्य से हम अपने साथ पूर्वाग्रहों, घृणा एवं धारणा इत्यादि का एक बहुत भारी बोझ लेकर चलते हैं । हमें लोगों को सहन करना सीखना चाहिये जिससे हमार अन्दर स्वीकार्यता विकसित होगी ।

पूज्य गुरुदेव एवं कमलेश भाई द्वारा दी गई सभी वार्ताओं का तमिल एवं कन्नड़ में अनुवाद किया गया जिससे कि उन प्रशिक्षकों को लाभ हो सके जिनको केवल अपनी मातृ भाषा का ज्ञान है । उन्होंने सामूहिक परिचर्चा, आपस में व्यक्तिगत सिटिंग एवं विभिन्न प्रकार के स्वैच्छिक कार्य भी किये जिसने प्रत्येक प्रतिभागी को यह सिखाया कि समूह में काम करना कितना आनन्ददायक होता है ।

अक्टूबर २०१४

चाईनीज सेमिनार (२–६ अक्टूबर, २०१४)

चीन के ११३, तुर्की के ३ एवं दक्षिण अफ्रीका के १६ अभ्यासियों ने मणपाक्कम में आयोजित इस सेमिनार में भाग लिया । सेमिनार में कमलेश भाई ने ३ दिन समूह को सम्बोधित किया तथा ५ अक्टूबर को एक प्रश्नोत्तर सत्र में भी भाग लिया । इन प्रेरणा दायक सत्रों की सभी ने प्रशंसा की और उनका पूरा आनन्द लिया । कमलेश भाई ने इस सेमिनार के दौरान चीन और दक्षिण अफ्रीका के प्रशिक्षकों के साथ दो बार मुलाकात की जिसमें महत्वपूर्ण सूचनाओं का आदान–प्रदान हुआ तथा उन पर चर्चा की गयी ।

अन्तिम दिन सायंकाल के समय सभी ने चीन के अभ्यासियों द्वारा विशेष रुप से बनाये गये चाईनीज भोजन का पुस्तकालय की छत पर आनन्द लिया । इस कार्यक्रम के सम्माननीय अतिथि कमलेश भाई थे । अभ्यासियों को प्रतिदिन सायंकालीन सत्संग के बाद कॉटेज के बगीचे में पूज्य गुरुदेव के साथ कुछ अतिमूल्यवान समय व्यतीत करने का अवसर मिला । ५ दिन के सेमिनार के बाद चीन के ६५ अभ्यासियों ने ७ से ११ अक्टूबर तक हिमालयन आश्रम सतखोल का भ्रमण किया ।

प्रथम वार्षिक उत्सव, वी.जी.टी.एम. क्षेत्रीय आश्रम, आन्ध्र प्रदेश

यह प्रथम वर्षगाँठ रविवार, ७ सितम्बर को इस क्षेत्र के अभ्यासियों द्वारा बहुत जोश और उत्साह के साथ मनायी गयी । पाँच केन्द्रों और २० उपकेन्द्रों के लगभग १००० अभ्यासियों की उपस्थिति ने इस अवसर को एक छोटे भण्डारे का रुप दे दिया था । इस अवसर पर तीन सत्संग और बहुत सी वार्तायें हुयीं । गुन्टूर और विजयवाड़ा केन्द्रों के बच्चों द्वारा प्रस्तुत प्रेम और भक्ति के संदेश सहित लघु नाटिकायें, भगवान कृष्ण और गोपियों को दर्शाती हुयी नृत्य प्रस्तुति, अभ्यासियों द्वारा प्रस्तुत आनन्दमग्न कर देने वाली कविताओं और गीतों ने प्रतिभागियों के हृदयों को दिव्य आभा से भर दिया ।

सहज मार्ग पहेली, नवसारी, गुजरात

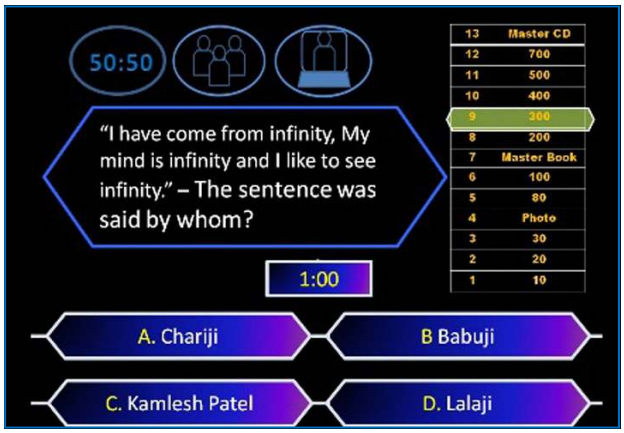

५ अक्टूबर २०१४ को नवसारी केन्द्र में सहज मार्ग पहेली का आयोजन किया गया । यह भारत में लोकप्रिय टेलीविज़न कार्यक्रम 'कौन बनेगा करोड़पति' की तर्ज पर बनायी गयी थी । इस पहेली का उद्देश्य अभ्यासियों में और अधिक उत्सुकता उत्पन्न करना था और परिणाम स्वरूप एक अभिनव और आकर्षक पहेली प्रारुप सामने आया । अभ्यासी भाईयों ने कम्प्यूटर पर एक कार्यक्रम तैयार किया था, जिसमें सभी प्रश्न मिशन और सहज मार्ग साधना पर आधारित थे । इसे खेलने में रुचि व्यक्त करने वालों में से नौ अभ्यासियों को चुना गया । कुल १३ प्रश्न इस में खेले गये । पहेली आयोजन के समय उपस्थित प्रत्येक अभ्यासी ने इसमें उत्साहपूर्वक भाग लिया । मिशन की पुस्तकें, गुरुदेव का चित्र और मिशन की एक सी०डी०/ डी०वी०डी० पुरस्कार के तौर पर दिये गये ।

सेवा के लिये तैयार, नान्डयाल आश्रम, आन्ध्र प्रदेश

इस ज़ोन में कार्य कर रहे १७० स्वंयसेवकों के लिये १२ से १४ सितम्बर तक तीन दिवसीय एक गोष्ठी का आयोजन किया गया । सभी प्रतिभागियों को एक तत्पर मार्गदर्शक द्वारा एक महीने से अधिक समय तक तैयार किया गया । कमलेश भाई के सतत् स्नेहपूर्ण मार्गदर्शन में भाई गंगाधर (अंचल प्रभारी) ने १५ सदस्यों के दल के साथ कार्यक्रम का आयोजन किया ।

प्रेम, सेवा और एकता प्रमुख केन्द्रीय विषय थे । किसी व्यक्ति के अन्दर इन प्रमुख तत्वों की पहचान और उनके विकास पर व्हिस्पर्स के संदेशों, हाल में जारी ग्लिम्प्सेज और गुरुदेव की कुछ वार्ताओं (डी०वी०डी०) आदि की सहायता से प्रकाश डाला गया ।

प्रत्येक दिन का आरम्भ सत्संग के साथ हुआ जिसके बाद १० मिनट का मौन और फ़िर ग्लिम्प्सेस का एक सोपान देखा जाता था । दिन के समय विभिन्न सत्र थे और प्रत्येक सत्र में एक निर्धारित विषय पर एक व्हिस्पर पढ़ा गया और प्रतिभागियों से अपने अन्दर कम्पन का प्रभाव महसूस करने और अपने भावनायें/ अनुभव लिखने के लिये कहा गया । वे सभी अपनी आन्तरिक अवस्थिति में हुए स्थिर रूपान्तरण को अवलोकन करने योग्य बन गये थे ।

वीडियो 'स्लाइसेज ऑफ इटरनिटी' और एक अन्य प्रेरणादायक वीडियो, कि कैसे एक व्यक्ति परिवर्तन ला सकता है, दिखाये गये । यह गुरुदेव के कथन कि 'एक गौरया ग्रीष्म ऋतु ला सकती है और एक व्यक्ति परिवर्तन ला सकता है' के अनुरूप था । प्रत्येक दिन कार्यक्रम के उपरान्त प्रशिक्षकों की बैठक, युवाओं की बैठक आदि की गयीं ।

एक महत्वपूर्ण पहलू जो सामने लाया गया वह था हमारे गुरुदेव द्वारा सेवा का उदाहरण, जो कि मानवता की सेवा करते हुए स्वयं को भूल जाते हैं और केवल अपने मालिक के बारे में सोचते हैं । हम उनका अनुकरण कर सकते हैं, केवल तभी यदि हम किसी भी कार्य को करने से पूर्व उनको अपने सामने रखें ।

एक सप्ताह के पश्चात् फीडबैक लिया गया । सभी अभ्यासी गुरुदेव के प्रेम में बंधे हुए थे और साधना को गहराई से करने के लिए उत्साहित थे और साथ ही अपने केन्द्रों में कार्य करते समय प्रेम के साथ सेवा भावना विकसित करने के लिये भी उत्साहित थे ।

प्रशिक्षक संगोष्ठी

उत्तराखण्ड

दिनांक ३० व ३१ अगस्त को अंचल १८ (उत्तराखण्ड) के सभी केन्द्र प्रभारियों एवं प्रशिक्षक प्रभारियों का दो दिवसीय सम्मेलन अंचल प्रभारी द्वारा हिमालयन आश्रम, सतखोल में आयोजित किया गया । अठारह प्रतिभागी एक बहुत ही अनौपचारिक वातावरण में एकत्र हुए और उन्होंने उनके केन्द्रों पर आयोजित विभिन्न गतिविधियों के बारे में विचार विमर्श किया । कार्यक्रम इस बहुत ही स्पष्ट जागरूकता के साथ सम्पन्न हुआ कि हृदय को कैसे उपयोग में लाया जाये कि यह सहज रूप से कार्य करे । पूरे समय एकात्मकता एवं घनिष्ठता का एक विस्मयकारी बन्धन व्याप्त रहा ।

काकीनाडा, आन्ध्र प्रदेश

दिनांक १३ सितम्बर को काकीनाडा आश्रम में आन्ध्र प्रदेश १–बी अंचल के २५ प्रशिक्षकों की गोष्ठी आयोजित की गयी । सत्संग के पश्चात् प्रातः ९ बजे अंचल प्रभारी ने अपने संबोधन में एकत्र लोगों को, उनकी कमलेश भाई से हुई वार्ता के, मूल्यवान बिन्दु बताये । विभिन्न विषयों यथा सिटिंग्स कैसे दी जाये, स्थिति को कैसे पढ़ा जाये, सिटिंग देते समय सुझाव की भूमिका, प्रशिक्षक का चरित्र और व्हिस्पर्स का महत्व पर चर्चा की गयी । काकीनाडा आश्रम से लगभग २२ किलोमीटर दूर स्थित अमराविल्ली आश्रम में दोपहर के भोजन के पश्चात् सत्संग के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ । आगामी त्रैमासिक गोष्ठी दिनांक १३ दिसम्बर को विशाखापट्टनम जिले के ए०जे०आर०नगर में आयोजित किये जाने का निर्णय लिया गया ।

अंचल प्रभारी का भीलवाड़ा, राजस्थान (पूर्व) का भ्रमण

दिनांक २८ सितम्बर को अंचल ७ बी के प्रभारी डा० जे० मधुकर कोचर ने प्रशिक्षक पूरणमल बैंदा के साथ भीलवाड़ा का दौरा किया । ११६ अभ्यासी सत्संग में उपस्थित हुए । उपस्थित अभ्यासियों को सम्बोधित करते हुए भाई कोचर ने कुछ उन स्मरणीय क्षणों को साझा किया, जो उन्होंने गुरुदेव के साथ व्यतीत किये थे । उन्होंने बताया कि एक अभ्यासी पर गुरुदेव का कार्य मिशन के साथ जुड़ने से बहुत पहले ही प्रारम्भ हो जाता है और वे गुरुदेव ही हैं जो मिशन में हमें लाते हैं । उन्होंने प्रश्न अथवा स्पष्टीकरण आमन्त्रित किये तथा इस टिप्पणी के साथ समापन किया कि प्रश्नविहीन होना आध्यात्मिक रूप से अच्छी स्थिति है । नाश्ते के पश्चात् भाई कोचर ने भीलवाड़ा में वर्तमान ध्यानकक्ष से ५ कि०मी० दूर स्थित आश्रम के लिये प्रस्तावित भूमि का दौरा किया । वहाँ आधा घण्टा व्यतीत करने के दौरान उन्होंने भूमि के बारे में विस्तृत विचार विमर्श किया और आवश्यक औपचारिकतायें, जो पूरी की जानी थीं, की ओर ध्यान आकर्षित किया । उनके भीलवाड़ा दौरे ने अभ्यासियों को मिशन के लिये अथक कार्य करने हेतु प्रेरणा दी ।

नवरात्रि समारोह, वडोदरा, गुजरात

दिनांक ५ अक्टूबर को वडोदरा में बच्चों व युवाओं ने नवरात्रि समारोह मनाया जिनमें लगभग ५० बच्चे व युवा अपने पारम्परिक परिधान में थे । सत्संग के पश्चात् बच्चों ने लगभग डेढ़ घन्टे तक पूर्ण उमंग, प्रेम एवं भाई–चारे के साथ गरबा किया, मानो वे गुरुदेव को भक्तिमय नृत्य भैंट कर रहे हों । बच्चों के उत्साह को देखकर बड़े अभ्यासी भी इसमें सम्मिलित हो गये । आश्रम में अल्पाहार के पश्चात् सभी विसर्जित हो गये ।

यू–कनेक्ट पहल

आत्म–विकास कोर्स, सिक्किम विश्वविद्यालय

सिक्किम विश्वविद्यालय ने 'आध्यात्मिकता के सन्दर्भ में आत्मविकास – एक व्यावहारिक दृष्टिकोण' पर एक ऐच्छिक पाठ्यक्रम, एस०आर०सी०एम० की यू–कनेक्ट पहल के अन्तर्गत प्रारम्भ किया। यू–कनेक्ट इन उद्देश्यों के लिये प्रारम्भ किया गया है – युवावर्ग को जीवन जीने के महत्वाकांक्षी मूल्य देना, आध्यात्मिक लक्ष्य के प्रति केन्द्रित एक संतुलित जीवन की उपलब्धि में व नैतिकता से भरे भौतिक जीवन जीने में उनकी सहायता करना तथा राष्ट्र निर्माण में योगदान देना।

पाठ्यक्रम ऐसे निर्मित किया गया है कि यह विद्यार्थियों को आत्मनिरीक्षण, चिंतन व ध्यान जैसे कौशल से सज्जित करे, जो कि उनमें सही मूल्यों का विकास करने व सहज तरीके से आन्तरिक रूपान्तरण लाने में सहायक होगा। इस कोर्स में जीवन मूल्य, अपनी सही पहचान की खोज, योग, दिव्य की परिकल्पना, विचार–शक्ति, ध्यान के तरीके, जीवन व जीवन जीने के सिद्धान्त, उत्कृष्टता, हमारे चुनाव और प्रेम जैसे विषय सम्मिलित हैं।

इस पाठ्यक्रम को दिनांक ६ सितंबर को भाई हर्शल जवाले (पुणे), मिसाल मेहता (कोलकाता), रवि तेलंग (सिक्किम) और बहन एलिजाबेथ किंग्सनॉर्थ (चैन्नई) की सहायता से प्रारम्भ किया गया। विद्यार्थियों से मिला फ़ीडबैक सकारात्मक व प्रोत्साहित करने वाला था। उन्होंने इस कोर्स को अपनी आवश्यकतानुसार संशोधित करने में भी सहायता की।

संकाय व फ़ेसिलिटेटर्स की प्रशिक्षण कार्यशाला
पुलगाँव आश्रम, महाराष्ट्र

दिनांक १७ व १८ अगस्त को पुलगाँव आश्रम में यू–कनेक्ट के २४ संकाय व फ़ेसिलिटेटर्स के लिये एक प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गयी। इस प्रशिक्षण में नागपुर, चन्द्रपुर, वर्धा, रायपुर (छत्तीसगढ़), यवतमाल और पुलगाँव से आये स्वयंसेवकों ने भाग लिया। श्रीधर थोडा (मुम्बई) ने सत्र का संचालन किया। सुधीर जी० अकोजवार (केन्द्र प्रभारी, चन्द्रपुर केन्द्र) ने कार्यशाला का समन्वय किया तथा आर० राजेन्द्रन (अंचल प्रभारी) और पुलगाँव केन्द्र के स्वयंसेवकों ने इस कार्यशाला को आयोजित करने में उत्साह से कार्य किया।

अभ्यासियों ने समूह में कार्य किया और 'दिखावटी सत्र' प्रस्तुत करने के साथ साथ खेल व अन्य गतिविधियाँ भी कीं। एक सत्र मराठी भाषा में पावर पॉइन्ट प्रस्तुतिकरण के साथ किया गया ताकि इस कोर्स को स्थानीय भाषा में भी संचालित किया जा सके। समापन सत्र में एक 'रोड–मेप' तय किया गया और संकाय सदस्य ने उत्साह प्रदर्शित किया।

नचिपाल्यम आश्रम, कोयम्बटूर, तमिलनाडु

दिनांक १५ से १७ अगस्त तक नचिपाल्यम आश्रम, कोयम्बटूर में एक तीन–दिवसीय यू–कनेक्ट कार्यशाला आयोजित की गयी जिसमें तमिलनाडु व केरल से लगभग १०० अभ्यासियों ने भाग लिया। उद्घाटन के पश्चात् चैन्नई से आये भाई श्रीरमन व कृष्णन ने यू–कनेक्ट की मूलभावना के सन्दर्भ में सत्र संचालित किये जिनमें संस्थाओं से कैसे सम्पर्क किया जाये तथा समन्वयकों, फ़ेसिलिटेटर्स व संकायों की भूमिका व उत्तरदायित्व क्या है आदि को समझाया गया। उन्होंने दिखावटी सत्र भी संचालित किये। प्रतिभागियों को १२ समूहों में बाँटा गया और प्रत्येक समूह को यू–कनेक्ट पाठ्यक्रम से एक अध्याय दिया गया।

दूसरे व तीसरे दिन, हर समूह ने विभिन्न विषयों पर दिखावटी सत्र प्रस्तुत किये। फ़ीड बैक सत्र व आगामी कार्ययोजना निर्धारण से इस कार्यक्रम का समापन हुआ। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम ने प्रतिभागियों को आवश्यक साहस व कॉलेजों में सत्र संचालित करने की सामर्थ्य प्रदान की।

इस कार्यक्रम को अपने केन्द्र में शुरू करने के लिये अपने अंचल प्रभारी से संपर्क करें या इस पतापर uconnect@srcm.org ई–मेयिल से संपर्क करें।

युवाओं के कार्यक्रम

त्रिची, तमिलनाडु

१६ और १७ अगस्त को त्रिची आश्रम में अंचल २ बी के १८ से ३५ वर्ष आयु के ४७ अभ्यासियों के लिये एक दो दिवसीय सत्र आयोजित किया गया । कार्यक्रम में प्राकृतिक चिकित्सा, आत्मानुसंधान, सामूहिक कार्य, नेतृत्व और स्वयं को समर्थ बनाने जैसे विषयों पर महत्वपूर्ण सत्र सम्मिलित थे । रसोईघर के स्वयंसेवकों ने अग्नि के बिना भोजन तैयार किया ।

कार्यक्रम में ऐसे सत्र भी थे जिनमें युवाओं के लिये ध्यान और सहजमार्ग अभ्यास के महत्व को दोहराया गया था । वार्ताओं ने युवाओं में जोश और साहस के साथ आगे बढ़ने के संकल्प को प्रज्वलित किया तथा उनके अन्दर के शेर को दहाड़ने का अवसर दिया, जैसा कि गुरुदेव द्वारा स्वयं बताया गया ।

बंगलौर, कर्नाटक

२१ सितम्बर को बंगलौर के पैंतीस युवा 'संप्रेषण' विषय पर बनशंकरी आश्रम में आयोजित एक दिवसीय कार्यक्रम में भाग लेने हेतु एकत्र हुए । इन सत्रों का उद्देश्य स्वयं से संवाद, दूसरों के साथ संवाद, श्रवण की भूमिका और किस प्रकार सहजमार्ग के विषय में दूसरों से बात करें, के महत्व को दर्शाना था । प्रत्येक सत्र में और अधिक स्पष्टता लाने के लिए उसके विषय से सम्बन्धित गुरुदेव की वार्ताओं के अंश वीडियो पर दिखाये गये ।

'स्वयं से संवाद' नामक सत्र के अन्तर्गत प्रत्येक प्रतिभागी को व्हिस्पर्स का एक संदेश उस पर मनन और ध्यान करने के लिए दिया गया । उसके बाद प्रतिभागी द्वारा विचार और अनुभव अपने साथी के साथ बाँटे गये । 'फ्लिपिगं दी स्विच' नामक खेल के माध्यम से विभिन्न परिस्थितियों और वातावरण के लिये उपयुक्त संप्रेषण के विभिन्न प्रकारों को जाँचा गया । दूसरे खेल के द्वारा एक अच्छा श्रोता होने का महत्व और उसके लिये आवश्यक योग्यता को प्रदर्शित किया गया ।

गुरुदेव के द्वारा एक विशेष श्रोतागण को प्रस्तुत की गयी वार्ता प्रत्येक समूह को दी गयी । इस पर चर्चा करने के बाद प्रत्येक समूह में से एक व्यक्ति ने इस पर बोला । इसके बाद 'ओह!' नामक खेल खेला गया जिसमें यह दर्शाया गया कि एक ही शब्द को विभिन्न स्वरोच्चारण और मुख मुद्राओं के साथ बोलने से उसका अर्थ परिवर्तित हो सकता है ।

प्रतिभागियों को सहजमार्ग के मूलभूत दर्शन को समझने में लाभदायक पुस्तकों की एक सूची 'अवश्य पढ़ें' दी गयी । यह सुझाव दिया गया कि जो लोग रविवार को अपना स्वयंसेवा कार्य समाप्त करने के बाद खाली रहते हैं वे साथ बैठकर इन पुस्तकों को आधा घंटा पढ़ सकते हैं ।

निबन्ध मूल्यांकन कार्यशालायें

हाल ही में सम्पन्न निबन्ध कार्यक्रम २०१४ के निबन्धों का मूल्यांकन अंचल स्तर पर किया गया ।

भोपाल, मध्य प्रदेश, अंचल ८ए

इसका उद्देश्य मूल्याकंन निर्देशों के विषय में जागृति पैदा करना था । कुछ वार्ताओं के पश्चात् प्रत्येक को एक प्रश्नावली पूर्ण करने के लिये दी गयी जिससे उनके बहुत से संदेहों को दूर करने में सहायता मिली । सभी प्रतिभागियों को नमूने के निबन्ध मूल्यांकन के लिये दिये गये, जिसके पश्चात् मूल्यांकन के मानदण्ड और कार्य–प्रणाली प्रस्तुत की गयी । इसके बाद प्रतिभागियों को, जो कुछ उन्होंने सीखा था उसको ध्यान में रखते हुये, उन्हीं निबन्धों का पुनर्मूल्यांकन करने के लिये कहा गया । कार्यशाला का समापन एक खुले सत्र और फ़ेसिलिटेटर्स – सुदर्शन सिंह (बहेड़ी केन्द्र), डाक्टर राजीव कुमार (आगरा केन्द्र) और विनोद कुमार (सीतापुर केन्द्र) – के फीडबैक के साथ हुआ ।

गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश (ज़ोन १२ए)

२७ और २८ सितम्बर को ७०० निबन्ध प्रविष्टियों में से ४५० की प्रारम्भिक जाँच के बाद ४० निबन्धों को विश्वमुख्यालय मणपाक्कम, चैन्नई भेजने के लिये चुना गया । आसपास के केन्द्रों से लगभग पचास अभ्यासी मूल्यांकन करने के लिये उपस्थित थे ।

अपनी साधना में नियमितता लाना

गुड़गाँव, दिल्ली

ज़ोनल आश्रम, दिल्ली में प्रत्येक रविवार 'सक्रिय अभ्यास' विषय पर हिन्दी में सत्र संचालित किये जा रहे हैं। इन तीन घंटे के सत्र, जो अगस्त में प्रारम्भ हुए थे, के अन्त में सत्संग किया जाता है। अब तक निम्नलिखित विषयों का समावेश हो चुका है: सहज मार्ग साधना के मूलभूत तत्व, गुरु, बन्धुत्व, डायरी लेखन, सफ़ाई, चरित्र–निर्माण के साधन और ध्यान। अक्टूबर माह से 'दस नियम' विषय का समावेश किया जायेगा। इसका उद्देश्य अभ्यासियों को उनके मूल अभ्यास में नया प्रोत्साहन देना है। इस पहल ने पद्धति को स्पष्टता प्रदान की है और अभ्यासियों को खुलकर सामने आने, प्रभावकारी रूप से विचारों का आदान–प्रदान करने और आपस में बन्धुत्व का अनुभव करने में मदद की है।

ओंगोल, आन्ध्र प्रदेश

साधना को नियमित करने के प्रयास में २८ सितम्बर से ४ अक्टूबर तक एक सप्त दिवसीय कार्यक्रम संचालित किया गया। इसमें १८ अभ्यासियों ने भाग लिया। सतत स्मरण और दस नियम सहित साधना के सभी पहलुओं का डीवीडी और प्रस्तुतियों की सहायता से ध्यानपूर्वक समावेश किया गया। भाई एम० भास्कर (केन्द्र प्रभारी) ने पूरे कार्यक्रम में भाग लिया और अभ्यासियों का उत्साह बढ़ाया।

करुमाथम्पट्टी, पश्चिमी तमिलनाडु

२१ सितम्बर को कोयम्बटूर से २० कि.मी. दूर करुमाथम्पट्टी केन्द्र से तीस अभ्यासियों ने बहन ए०के०मुथुलक्ष्मी द्वारा 'अनुभवों का आदान–प्रदान' विषय पर आयोजित एक सत्र में भाग लिया। कार्यक्रम सहज मार्ग को अपनाने के बाद स्वयं में अवलोकन किये गये परिवर्तनों पर केन्द्रित था। अभ्यासियों द्वारा बताये गये गुणों में थे: गुरु के प्रति बढ़ता हुआ प्रेम और श्रद्धा, क्रोध में कमी, ईर्ष्या की भावना में कमी, अधिक सहनशक्ति और सहिष्णुता, बढ़ा हुआ आत्म विश्वास, कम चिन्तायें, अधिक सादगी, तथा बन्धुत्व की प्रबल भावना। हर एक के अनुभवों को सुनना बहुत ही रोचक था और सभी अभ्यासियों ने कार्यक्रम का आनन्द लिया।

गुलबर्गा, कर्नाटक

६ और ७ सितम्बर को आश्रम में 'मिशन का साहित्य पढ़ने का महत्त्व' विषय पर एक कार्यक्रम संचालित किया गया। इसमें गुलबर्गा, बीदर, हुमनाबाद, चांगलेर, चितापुर, सेडम, चिंचोली, शोरापुर, गोगी और अन्य केन्द्रों से लगभग १५० अभ्यासी उपस्थित हुए। सुबह के सत्संग के बाद अनेक उदाहरणों, चित्रात्मक रूपरेखाओं, गुरुदेव की वार्ताओं के ऑडियो–वीडियो अंशों सहित एक सविस्तार प्रस्तुतिकरण दिया गया। सायंकालीन सत्संग के साथ सत्रों का समापन हुआ। सभी अभ्यासियों ने कार्यक्रम से मिले गहन लाभ और आनन्द की भावना को व्यक्त किया।

त्रिची, पूर्वी तमिलनाडु

१४ सितम्बर को एक दिवसीय केन्द्र सम्मेलन का आयोजन किया गया। अंचल २ बी (तमिलनाडु पूर्व) में ३ केन्द्र हैं: विल्लुपुरम, त्रिची और तंजौर; जिनमें से प्रत्येक केन्द्र तीन से चार मास के अन्तराल में बन्धुत्व की भावना को प्रोत्साहित करने के लिये एक दिवसीय बैठक का आयोजन करता है।

संगोष्ठी का विषय था, 'लक्ष्य पाने की ओर'। प्रत्येक केन्द्र सहनशक्ति, इच्छाशक्ति, आत्मसमर्पण, सेवा, आज्ञापालन, श्रद्धा और पूर्णविश्वास, सहयोग, बन्धुत्व तथा प्रेम को सम्मिलित करते हुए किसी एक विषय पर तैयारी करके आया था। दिन का आरम्भ बच्चों और युवाओं द्वारा एक सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ हुआ। विषयों पर संचालित सत्रों के पश्चात् सायंकालीन सत्संग के साथ गोष्ठी का समापन हुआ।

कडलोर, तमिलनाडु पूर्व

२१ सितम्बर को विल्लुपुरम, नेवेली, पाँडिचेरी, कडलोर और अन्य उपकेन्द्रों से लगभग १२० अभ्यासियों ने केन्द्र के वार्षिक सम्मेलन में भाग लिया। एस.एम.एस.एफ़ को ध्यान–कक्ष उपहार में मिलने के बाद यह पहला बड़ा आयोजन था । 'सहज–मार्ग के मूल तत्व' विषय पर समूह चर्चा की गयी जिसके पश्चात् 'बोध' विषय पर एक वार्ता प्रस्तुत की गई । 'पश्चिम में भारत' नामक डी.वी.डी. दिखाई गई तथा भाई प्रशान्त वसु द्वारा लिखी गई पुस्तक 'गुरूदेव के चरणों में – एक शिष्य का बनना' पर कड्डालोर के दो अभ्यासियों द्वारा प्रस्तुतिकरण दिया गया ।

वडोदरा, गुजरात

वडोदरा नगर को सात ज़ोन में बाँटा गया है । हर ज़ोन में एक स्वयंसेवक दल है जिसे एक विशिष्ट कार्यक्षेत्र के लिये उत्तरदायित्व दिया गया है । साधना का स्तर सुधारने के लिये होम गैदरिंग, खुले–सत्र तथा अन्य पहल की जाती हैं । १३ सितम्बर को "जीवन का लक्ष्य" विषय पर आयोजित कार्यशाला में मकरपुरा तथा मंजालपुरा से लगभग ४५ अभ्यासियों ने सहभागिता की । सत्संग के पश्चात् अभ्यासियों से अनुरोध किया गया कि वे अपने "जीवन का लक्ष्य" अपनी डायरी में लिखें, और फ़िर उन्हें तीन प्रश्न दिये गये जिन पर उन्हें मनन–चिन्तन करना था । सत्य का उदय नामक पुस्तक के अध्याय 'जीवन का लक्ष्य' का एक परिच्छेद पढ़ा गया तथा उसे सुनने के पश्चात् प्रतिभागियों को छोटे समूहों में बाँटा गया । उन्हें अपनी समझ और विचार आपस में बाँटने के लिये कहा गया । एक प्रशिक्षक भाई ने पढ़े गये अंश के ऊपर अपने विचार प्रकट किये तथा प्रतिभागियों ने जोड़े में अपने अनुभव साझा किये । अन्त में प्रतिभागियों ने अपने जीवन का लक्ष्य फिर से अपनी डायरी में लिखा, जो कि इस बार उनकी नयी समझ पर आधारित था । यह कार्यशाला बहुत लाभदायक रही ।

तिरूपुर, तमिलनाडु पश्चिम

५ अक्टूबर को चेट्टिपलयम आश्रम में सुबह के सत्संग के बाद भाई एन० प्रकाश ने सितम्बर माह के अन्त में मणपाक्कम आश्रम में प्रशिक्षकों के लिये आयोजित सेमिनार के बारे में एक संक्षिप्त वार्ता दी । नाश्ते के पश्चात् उपस्थित ६०० अभ्यासियों को विभिन्न समूहों में, उन प्रशिक्षकों के साथ जिनसे वे व्यक्तिगत सिटिंग लेते थे, बाँट दिया गया । प्रशिक्षकों ने बताया कि कमलेश भाई ने इस बात पर जोर दिया है कि साधना प्रतिदिन एक निश्चित समय पर की जानी चाहिये । यह सुझाव दिया गया कि जिन अभ्यासियों को घर में ध्यान करने में परेशानी होती है वे एक स्थान पर एकत्रित होकर साथ–साथ ध्यान कर सकते हैं । साधना में उत्साह उत्पन्न करना ही वार्ता का केन्द्र था । कमलेश भाई की सलाह है कि परिणाम जानने के लिये कम से कम दस दिनों तक पूरी दृढ़ता के साथ साधना करनी चाहिये । विचार –विमर्श के बाद सभी अभ्यासी इस इरादे के साथ वापस लौटे कि वे इन बातों को पूरे जोश के साथ अपने अभ्यास में लागू करेंगे । वर्तमान में प्रात: ६:०० बजे का सत्संग नगर में दो स्थानों पर आयोजित किया जा रहा है ।

विट्टल, तटीय कर्नाटक

२१ सितम्बर को 'लक्ष्य' नामक विषय पर एक पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया । सोलह अभ्यासियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया । अभ्यासियों ने बताया कि किस प्रकार साधना में प्रगति के साथ 'लक्ष्य' के प्रति उनके विचार बदलते चले गये । बाबूजी महाराज की पुस्तकों के उद्धरणों को पढ़ने के बाद अभ्यासियों ने अनुभव किया कि उनके जीवन का वास्तविक लक्ष्य स्वयं 'गुरूदेव' हैं । उन्होंने लक्ष्य तक पहुँचने के विभिन्न तरीकों पर विचार किया तथा सहज मार्ग प्रार्थना की प्रथम पंक्ति, 'तू ही मनुष्य जीवन का वास्तविक ध्येय है' के अर्थ पर मनन करते हुये कार्यक्रम समाप्त किया ।

ग्राउन्डिंग इन दी प्रेक्टिस

ये प्रशिक्षण कार्यक्रम भारत के अनेक केन्द्रों में बड़े जोर–शोर से चल रहे हैं । इस प्रशिक्षण के चार भाग हैं – ध्यान, निर्मलीकरण, डायरी लेखन तथा प्रार्थना ।

बीकानेर

२६ सितम्बर को **बीकानेर**, राजस्थान में आयोजित कार्यशाला में बीकानेर, लाडनू, जसवंतगढ़, डीडवाना, कुचेरा एवं श्रीगंगानगर केंद्रों के कुल ८५ अभ्यासियों ने भाग लिया ।

गोवा

गोवा में १६ और १७ अगस्त को आयोजित कार्यक्रम में गोवा, कार्वार और कोल्हापुर से ३२ अभ्यासियों ने भाग लिया ।

त्रिप्रयार

१२ अक्तूबर को केरल के **त्रिप्रयार** आश्रम में आयोजित सत्र में ३४ अभ्यासियों ने भाग लिया ।

हापुड़

उत्तर प्रदेश के **हापुड़** आश्रम में दिनांक ७ सितम्बर को आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम से ८७ अभ्यासी लाभान्वित हुए ।

संदेश का प्रसार

ईकोज टीम को भारतवर्ष के अनेक केंद्रों से ओपन हाउस आयोजित किये जाने के सम्बन्ध में लेख प्राप्त हुए हैं । उनमें से कुछ आयोजनों के छायाचित्र यहाँ नीचे प्रकाशित किये जा रहे हैं ।

आगरा

ग्वालियर

पुलियमपट्टी

खतौली

वल्साड

भीलवाड़ा

नये प्रकाशनों का विमोचन

व्हट इज सहज मार्ग

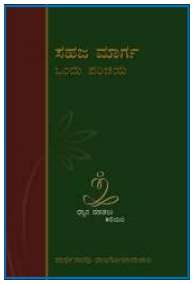
व्हट इज सहज मार्ग
कन्नड़

डिवोशन
अंग्रेज़ी

हार्ट स्पीक २०११
मराठी

हार्ट स्पीक २०१३
अंग्रेजी

हार्ट स्पीक २०११
हिन्दी

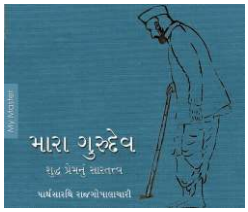

माइ मास्टर एम.पी.–३,
ऑडिओ बुक,
गुजराती

झलकियाँ

बलिया, उत्तरप्रदेश

बलिया के एक पौलीटेक्निक कॉलेज में १४ सितम्बर को युवाओं के लिए एक सेमिनार का आयोजन किया गया । सेमिनार का विषय था – 'युवावस्था: प्रतिज्ञा और प्रयास का समय' । इस सेमिनार में लगभग १०० विद्यार्थियों एवं २५ शिक्षकों और अभिभावकों ने भाग लिया ।

बाल एवं युवा केंद्र, कोलकाता

कोलकाता आश्रम में आने वाले बच्चों की बढ़ती संख्या की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए, पूज्य गुरुदेव की कृपा एवं सहमति से बाल एवं युवा केन्द्र (सी.वाइ.सी.) हेतु एक पृथक कक्ष के निर्माण की स्वीकृति प्रदान की गयी । बच्चों द्वारा खेलकूद के लिये प्रयुक्त खुले स्थान पर एक साधारण से कक्ष का निर्माण किया गया । इस नयी सुविधा का उद्घाटन १४ सितंबर को कोलकाता आश्रम में बच्चों के एक समारोह के साथ हुआ जिसके लिये सी.वाइ.सी. के एक समर्पित स्वयंसेवकों के समूह द्वारा उनका मार्गदर्शन किया गया ।

मूल्य शिक्षा: समाचार

नई दिल्ली

इस कार्यक्रम को अप्रैल २०१४ में एम्बिएन्स पब्लिक स्कूल में प्रारम्भ किया गया । सप्ताह में एक बार कक्षा आयोजित की जाती है । यद्यपि छात्रों द्वारा प्रारम्भ में पर्याप्त रुचि नहीं दिखाई गयी, प्रारम्भिक तीन पाठ पूरे होने के बाद कक्षा ८ से १२ के छात्र पाठ्यक्रम के प्रति सहजता अनुभव करने लगे । साहस, सच्चाई और विनम्रता वह तीन मूल्य हैं जिन्हें अब तक सिखाया गया है । विनम्रता मूल्य पर बच्चों से काफ़ी प्रतिरोध मिला । इन कक्षाओं से प्रत्येक छात्र कुछ ना कुछ सीख रहा है चाहे वह कम ही क्यों न हो ।

दूसरे विद्यालय के रूप में पश्चिम दिल्ली स्थित विद्या भारती स्कूल में कक्षा ८ और ९ के छात्रों के लिए जुलाई २०१४ में यह कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया । इस विद्यालय में छात्रों की संख्या काफ़ी अधिक है और इन दोनों कक्षाओं में ७ वर्गों में लगभग ४०० छात्र हैं । यद्यपि उपरोक्त दोनों विद्यालय दिल्ली के भिन्न–भिन्न सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश से हैं, परन्तु प्रतिक्रिया लगभग लगभग एक सी है।

मुम्बई – महाराष्ट्र

२७ अगस्त को नागोठाणे के जे.एच. अंबानी विद्या मंदिर मराठी मीडियम स्कूल में आयोजित जागरूकता कार्यक्रम में लगभग ४५ शिक्षकों ने सहभागिता की । कार्यक्रम का संचालन सीमा त्रिपाठी द्वारा काफ़ी सौम्य परन्तु प्रभावशाली ढंग से किया गया । सत्र के अन्त में कुछ शिक्षकों द्वारा ध्यान के बारे में जानकारी चाही गयी । ५–६ शिक्षकों ने स्वयंसेवकों की सहायता करने का वचन दिया और कक्षा ८ और ९ के छात्रों के लिये ऐसी कक्षायें आयोजित करने का प्रस्ताव किया । विद्यालय की प्रधानाचार्या ने बच्चों में मानवीय गुण विकसित करने के समान लक्ष की चर्चा की और कहा कि इस के लिये मूल्य शिक्षा अत्यन्त महत्वपूर्ण है । उन्होंने स्वयंसेवकों को अपना पूरा सहयोग देने का वचन दिया ।

यदि आप अपने केन्द्र पर किसी विद्यालय में मूल्य शिक्षा कार्यक्रम प्रारम्भ करना चाहते हैं तो अपने अंचल प्रभारी से सम्पर्क करें या इस पतापर vbe@shpt.in ई–मेयिल से संपर्क करें ।

शोलावन्दन आश्रम, तमिलनाडु

प्रकाश का केन्द्र

शोलावन्दन मदुरई से २८ किलोमीटर दूर एक नगर पंचायत है । श्रीरामचन्द्र मिशन केन्द्र के रूप में इसका औपचारिक शुभारम्भ ५ अगस्त १९८७ को डा० सदयाण्डि द्वारा अपने आवास पर किया गया । आरम्भ के दिनों में वहाँ लगभग १५ अभ्यासी सत्संग में सम्मिलित होते थे । सत्तर और अस्सी के दशक में गुरुदेव ने शोलावन्दन का कई बार भ्रमण किया और डा० सदयाण्डि के निवास पर सत्संग कराया । उन्होंने इस केन्द्र के संवर्धन और विकास पर व्यक्तिगत रुचि दिखाई थी।

आश्रम

जब यहाँ पर एक आश्रम की आवश्यकता अनुभव की गयी तो डा० सदयाण्डि ने शोलावन्दन रेलवे स्टेशन के निकट २ एकड़ ४३ सेन्ट भूमि खरीदी, जिसमें से १ एकड़ २० सेन्ट भूमि आश्रम के लिये दे दी गयी । आश्रम का निर्माण वर्ष १९९६ में अभ्यासियों के चन्दे तथा मुख्यालय से प्राप्त वित्तीय सहायता द्वारा आरम्भ किया गया । संयुक्त सचिव भाई ए०पी०दुरई ने निर्माण के दौरान २४ अगस्त १९९८ को केन्द्र का भ्रमण किया तथा समस्त आवश्यक सहायता प्रदान की । आश्रम १२ मई १९९९ को पंजीकृत हुआ तथा इसका उद्घाटन १२ जनवरी २००० को गुरुदेव द्वारा किया गया । उद्घाटन समारोह में विभिन्न केन्द्रों के ३०० से भी अधिक अभ्यासी एकत्र हुए ।

ध्यान कक्ष ५२ फ़ीट लम्बा तथा २२ फ़ीट चौड़ा है और इसमें करीब २०० अभ्यासी बैठ सकते हैं । इसके अतिरिक्त आश्रम में एक रसोईघर, पुस्तकालय और एक प्रसाधन ब्लॉक है । अनेक खुले सत्रों के आयोजन द्वारा यहाँ पर अभ्यासियों की संख्या में निरन्तर वृद्धि होती रही है और वर्तमान में इस केन्द्र में ११० अभ्यासी ऐसे हैं जो यहाँ आयोजित रविवारीय सत्संग में नियमित रूप से उपस्थित होते हैं । प्रत्येक माह के तीसरे रविवार को पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया जाता है तथा प्रत्येक चौथा रविवार स्वैच्छिक कार्य के लिये निर्धारित दिन है । केन्द्र में उत्साही युवा अभ्यासियों की एक टीम है और वे लोग आध्यात्मिक जागरूकता का प्रसार कर रहे हैं । वे क्रेस्ट के कार्यक्रमों में सहभागिता करते हैं, साधना के बारे में जागरूक करने हेतु लघु नाटिकायें प्रस्तुत करते हैं तथा समूह चर्चा व कौशल विकास कार्यक्रमों में सम्मिलित रहते हैं । इस केन्द्र ने निकटस्थ उपकेन्द्रों यथा डिण्डीगुल, बटलागुन्डु एवं वादिपट्टी की प्रारम्भिक अवस्थाओं में पूरी देखभाल की ।

To download or subscribe to this newsletter, please visit http://www.sahajmarg.org/newsletter/india For feedback, suggestions and news articles please send email to in.newsletter@srcm.org
© 2014 Shri Ram Chandra Mission ("SRCM"). All rights reserved. “Shri Ram Chandra Mission", "Sahaj Marg", “SRCM”, “Constant Remembrance” and the Mission's Emblem are registered Trademarks of Shri Ram Chandra Mission.This Newsletter is intended exclusively for the members of SRCM. The views expressed in the various articles are provided by various volunteers and are not necessarily those of SRCM.